पूर्वोत्तर सृजन पत्रिका : विशेषज्ञों द्वारा समीक्षित अर्धवार्षिक हिंदी ई-पत्रिका
वर्ष :1, संख्या :1; जुलाई-दिसंबर, 2020

# प्रतिनिधि

सुमिता धर बसु ठाकुर

समय को स्पर्श करता इतिहास
गरजता है यथार्थ के कानों में
छलकता है कितना नृतात्विक प्रयत्न
टूटने-गड़ने का सुख
कितने अधिकार अपने सिरहाने
ताने हुए युग-युग से
नीले घाव से लथपथ बुलेट-प्रेम का
एक जंगली चेहरा।
इस वर्ण के शरीर में
लिपटा है कृत्य-कीचड़, अवहेलना
अरण्य के अंधकार में घुला है
झुका आशु
दहकता अन्नदाना।
मैंने देखी है महाश्वेता की लेखनी
मैं पहचानती हूँ बिरसा का अँधेरा
मैंने देखे हैं कालगर्भ में रोपित
दाने, अंकुर, लहराती रोशनी।
नंगे शरीर की छटपटाहट में
देखी हैं सर्दी की रातें।
हथौड़ा
ठोकता है कलम का गुंजन भी
भयभीत दृष्टि से सुर ताने है बिरसा,
साहस की कथायें सुनाती दिशायें
हजार घावों में लिपटा मरहम
जिसका हर हिस्सा कहता है बिरसा के नाम।

# शांतिनिकेतन

सुमिता धर बसु ठाकुर

रवि कवि आनंद धारा, छलके देखो हर घर में।
सृष्टि में आज पुष्प खेले, सुर सजाये हर मन में॥

छोटी-छोटी कोमल कलियाँ, नृत्य भुवन उनके आँगन।
चित्त में आज त्रिभंग डोले, श्रद्धा सुमन कर अर्पण॥
पंक्तियों में लय तालों की मात्रा विभाग सुर साधना।
अंतर आज पूर्ण किये संगीत की हर भावना॥

कविता में झलके देखो, हर एक तस्वीर में रवि।
सफ़ेद स्वच्छ दारी में से हँसती रही उनकी छवि॥

द्रीम द्रीम द्रुम मधुर-मधुर विश्वकवि ताल लय में।
तस्वीर आज छायी हुयी हर विश्ववासी के मन में॥
हर उपवन आज लगे है हरभरा शांति सुमन।

प्रेम की माला गले लगाकर आज सजा है
शांतिनिकेतन॥